

अनुक्रमणी

गद्यखंड

- | | |
|--------------------------|-------------------------------------|
| 1. भीमराव अंबेदकर | श्रम विभाजन और जाति प्रथा (निबंध) |
| 2. नलिन विलोचन शर्मा | विष के दाँत (कहानी) |
| 3. मैक्समूलर | भारत से हम क्या सीखें (भाषण) |
| 4. हजारी प्रसाद द्विवेदी | नाखून क्यों बढ़ते हैं (ललित निबंध) |
| 5. गुणाकर मुले | नागरी लिपि (निबंध) |
| 6. अमरकांत | बहादुर (कहानी) |
| 7. रामविलास शर्मा | परंपरा का मूल्यांकन (निबंध) |
| 8. पं० बिरजू महाराज | जित-जित में निरखत हूँ (साक्षात्कार) |
| 9. अशोक वाजपेयी | आविन्यों (ललित रचना) |
| 10. विनोद कुमार शुक्ल | मछली (कहानी) |
| 11. यतीन्द्र मिश्र | नौबतखाने में इबादत (व्यक्तिचित्र) |
| 12. महात्मा गाँधी | शिक्षा और संस्कृति (शिक्षाशास्त्र) |

काव्यखंड

- | | |
|-----------------------------|---|
| 1. गुरु नानक | राम बिनु विरथे जगि जनमा, जो नर दुख में दुख नहीं मानें |
| 2. रसखान | प्रेम-अयनि श्री राधिका, करील के कुंजन ऊपर बारी |
| 3. घनानंद | अति सूधो सनेह को मारग है, मो असुवानिहिं लैं बरसी |
| 4. प्रेमधन | स्वदेशी |
| 5. सुमित्रानंदन पंत | भारतमाता |
| 6. रामधारी सिंह दिनकर | जनतंत्र का जन्म |
| 7. स० हो० वात्स्यायन अज्ञेय | हिरोशिमा |
| 8. कुँवर नारायण | एक वृक्ष की हत्या |
| 9. वीरेन डंगवाल | हमारी नींद |
| 10. अनामिका | अक्षर-ज्ञान |
| 11. जीवनानंद दास | लौटकर आऊँगा फिर |
| 12. रेनर मारिया रिल्के | मेरे बिना तुम प्रभु |

गद्यखंड

भीमराव अंबेडकर



बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 ई० में महु, मध्यप्रदेश में एक दलित परिवार में हुआ था। मानव मुक्ति के पुरोधा बाबा साहेब अपने समय के सबसे सुपठित जनों में से एक थे। प्राथमिक शिक्षा के बाद बड़ौदा नरेश के प्रोत्साहन पर उच्चतर शिक्षा के लिए न्यूयार्क (अमेरिका), फिर वहाँ से लंदन (इंग्लैंड) गए। उन्होंने संस्कृत का धार्मिक, पौराणिक और पूरा वैदिक वाङ्मय अनुवाद के जरिये पढ़ा और ऐतिहासिक सामाजिक क्षेत्र में अनेक मौलिक स्थापनाएँ प्रस्तुत कीं। सब मिलाकर वे इतिहास मीमांसक, विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, शिक्षाविद् तथा धर्म-दर्शन के व्याख्याता बनकर उभरे। स्वदेश में कुछ समय उन्होंने वकालत भी की। समाज और राजनीति में बेहद सक्रिय भूमिका निभाते हुए उन्होंने अछूतों, स्त्रियों और मजदूरों को मानवीय अधिकार व सम्मान दिलाने के लिए अथक संघर्ष किया। उनके चिंतन व रचनात्मकता के मुख्यतः तीन प्रेरक व्यक्ति रहे बुद्ध, कबीर और ज्योतिबा फुले। भारत के संविधान निर्माण में उनकी महती भूमिका और एकनिष्ठ समर्पण के कारण ही हम आज उन्हें भारतीय संविधान का निर्माता कह कर श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। दिसंबर 1956 ई० में दिल्ली में बाबा साहेब का निधन हो गया।

बाबा साहेब ने अनेक पुस्तकें लिखीं। उनकी प्रमुख रचनाएँ एवं भाषण हैं 'द कास्ट्स इन इंडिया: देयर मैकेनिज्म, जेनेसिस एंड डेवलपमेंट', 'द अनटचेबल्स: हू आर दे', 'हु आर शूदाज', 'बुद्धिज्म एंड कम्युनिज्म', 'बुद्धा एंड हिज धम्मा', 'थाट्स ऑन लिग्विस्टिक स्टेट्स', 'द राइज एंड फॉल ऑफ द हिन्दू वीमेन', 'एनीहिलेशन ऑफ कास्ट' आदि। हिंदी में उनका संपूर्ण वाङ्मय भारत सरकार के कल्याण मंत्रालय से 'बाबा साहेब अंबेडकर संपूर्ण वाङ्मय' नाम से 21 खंडों में प्रकाशित हो चुका है।

यहाँ प्रस्तुत पाठ बाबा साहेब के विख्यात भाषण 'एनीहिलेशन ऑफ कास्ट' के ललई सिंह यादव द्वारा किए गए हिंदी स्पांतर 'जाति-भेद का उच्छेद' से किंचित संपादन के साथ लिया गया है। यह भाषण 'जाति-पाति तोड़क मंडल' (लाहौर) के वार्षिक सम्मेलन (सन् 1936) के अध्यक्षीय भाषण के रूप में तैयार किया गया था, परंतु इसकी क्रांतिकारी दृष्टि से आयोजकों की पूर्णतः सहमति न बन सकने के कारण सम्मेलन स्थगित हो गया और यह पढ़ा न जा सका। बाद में बाबा साहेब ने इसे स्वतंत्र पुस्तिका का रूप दिया। प्रस्तुत आलेख में वे भारतीय समाज में श्रम विभाजन के नाम पर मध्ययुगीन अवशिष्ट संस्कारों के रूप में बरकरार जाति प्रथा पर मानवीयता, नैसर्गिक न्याय एवं सामाजिक सद्भाव की दृष्टि से विचार करते हैं। जाति प्रथा के विषमतापूर्ण सामाजिक आधारों, रूढ़ पूर्वग्रहों और लोकतंत्र के लिए उसकी अस्वास्थ्यकर प्रकृति पर भी यहाँ एक संभ्रांत विधिवेत्ता का दृष्टिकोण उभर सका है। भारतीय लोकतंत्र के भावी नागरिकों के लिए यह आलेख अत्यंत शिक्षाप्रद है।

श्रम विभाजन और जाति प्रथा

यहा विडंबना की ही बात है कि इस युग में भी 'जातिवाद' के पोषकों की कमी नहीं है। इसके पोषक कई आधारों पर इसका समर्थन करते हैं। समर्थन का एक आधार यह कहा जाता है कि आधुनिक सभ्य समाज 'कार्य कुशलता' के लिए अत विभाजन को आवश्यक मानता है और चूंकि जाति प्रथा पो श्रम विभाजन का ही दूसरा रूप है इसलिए, इसमें कोई बुराई नहीं है। इस तर्क के संबंध में पहली बात तो यही आपत्तिजनक है कि जाति प्रथा श्रम विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन का भी रूप लिए हुए है। श्रम विभाजन निश्चय ही सभ्य समाज को आवश्यकता है, परंतु किसी भी सच्च समाज में श्रम विभाजन की व्यवस्था श्रमिकों के विभिन्न बगों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं करती। भारत की जाति प्रथा की एक और विशेषता यह है कि यह श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन हो नहीं करती बल्कि विभानित वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच भी करार देती है, जो कि विश्व के किसी भी समाज में नहीं पाया जाता।

जाति प्रथा को यदि श्रम विभाजन मान लिया जाए तो यह स्वाभाविक विभाजन नहीं है। क्योंकि यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। कुशल व्यक्ति या सक्षम श्रमिक समाज का निर्माण करने के लिए यह आवश्यक है कि हम व्यक्तियों की क्षमता इस सीमा तक विकसित करें, जिससे वह अपने पेशा या कार्य का चुनाव स्वयं कर सके। इस सिद्धांत के विपरीत जाति प्रथा का दुषित सिद्धांत यह है कि इससे मनुष्य के प्रशिक्षण अथवा उसकी निजी क्षमता का विचार किए बिना, दूसरे ही दृष्टिकोण, जैसे माता-पिता के सामाजिक स्तर के अनुसार, पहले से ही अर्थात् गर्भधारण के समय से ही मनुष्य का पेशा निर्धारित कर दिया जाता है।

जाति प्रथा पेशे का दोषपूर्ण पूर्वनिर्धारण ही नहीं करती बल्कि मनुष्य को जीवनभर के लिए एक पेशे में बाँध भी देती है। भले ही पेशा अनुपयुक्त या अपर्याप्त होने के कारण यह भूखों मर जाए। आधुनिक युग में यह स्थिति प्रायः अती है; क्योंकि उद्योग-धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में निरंतर विकास और कभी-कभी अकस्मात् परिवर्तन हो जाता है, जिसके कारण मनुष्य को अपना पेशा बदलने की आवश्यकता पड़ सकती है और यदि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मनुष्य को अपना पेशा बदलने की स्वतंत्रता न हो तो इसके लिए भूखों मरने के अलावा क्या चारा रह जाता है ? हिंदू धर्म की जाति प्रथा किसी भी व्यक्ति को ऐसा पेशा चुनने की अनुमति नहीं देती है, जो उसका पैतृक पेशा न हो, भले ही वह उसमें पारंगत हो। इस प्रकार पेशा परिवर्तन की अनुमति न देकर जाति प्रथा भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख व प्रत्यक्ष कारण बनी हुई है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि श्रम विभाजन की दृष्टि से भी जाति प्रथा गंभीर दोषों से युक्त है। जाति प्रथा का श्रम विभाजन मनुष्य की स्वेच्छा पर निर्भर नहीं रहता। मनुष्य की व्यक्तिगत भावना तथा व्यक्तिगत रुचि का इसमें कोई स्थान अथवा महत्त्व नहीं रहता। इस आधार पर हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि आज के उद्योगों में गरीबी और उत्पीड़न इतनी बड़ी समस्या नहीं जितनी यह कि बहुत से लोग 'निर्धारित' कार्य को 'अरुचि' के साथ केवल विवशतावश करते हैं। ऐसी स्थिति स्वभावतः मनुष्य को दुर्भावना से ग्रस्त रहकर टालू काम करने और कम काम करने के लिए प्रेरित करती है। ऐसी स्थिति में जहाँ काम करने वालों का न दिल लगता हो न दिमाग, कोई कुशलता कैसे प्राप्त की जा सकती है। अतः यह निर्विवाद रूप से सिद्ध हो जाता है

कि आर्थिक पहलू से भी जाति प्रथा हानिकारक प्रथा है। क्योंकि यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणारुचि व आत्म-शक्ति को दबा कर उन्हें अस्वाभाविक नियमों में जकड़ कर निष्क्रिय बना देती है।

अब मैं समस्या के रचनात्मक पहलू को लेता हूँ। मेरे द्वारा जाति प्रथा की आलोचना सुनकर आप लोग मुझसे यह प्रश्न पूछना चाहेंगे कि यदि मैं जातियों के विरुद्ध हूँ, तो फिर मेरी दृष्टि में आदर्श समाज क्या है? मेरा उत्तर होगा कि मेरा आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता, भ्रातृत्व पर आधारित होगा। क्या यह ठीक नहीं है, भ्रातृत्व अर्थात् भाईचारे में किसी को क्या आपत्ति हो सकती है ? किसी भी आदर्श समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए जिससे कोई भी वांछित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे छोर तक संचारित हो सके। ऐसे समाज के बहुविध हितों में सबका भाग होना चाहिए तथा सबको उनकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सामाजिक जीवन में अबाध संपर्क के अनेक साधन व अवसर उपलब्ध रहने चाहिए। तात्पर्य यह कि दूध-पानी के मिश्रण की तरह भाईचारे का यही वास्तविक रूप है, और इसी का दूसरा नाम लोकतंत्र है। क्योंकि लोकतंत्र केवल शासन की एक पद्धति ही नहीं है, लोकतंत्र मूलतः सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति तथा समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। इसमें यह आवश्यक है कि अपने साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव हो।



बोध और अभ्यास

पाठ के साथ

1. लेखक किस विडंबना की बात करते हैं? विडंबना का स्वरूप क्या है?
2. जातिवाद को पोषक उसके पक्ष में क्या तर्क देते हैं?
3. जातिवाद के पक्ष में दिए गए वकों पर लेखक की प्रमुख आपत्तियाँ क्या हैं?
4. जाति भारतीय समाज में श्रम विभाजन का स्वाभाविक रूप क्यों नहीं कही जा सकती ?
5. जातिप्रथा भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख और प्रत्यक्ष कारण कैसे बनी हुई है?
6. लेखक आज के उद्योगों में गरीबी और उत्पीड़न से भी बड़ी समस्या किसे मानते हैं और क्यों ?
7. लेखक ने पाठ में किन प्रमुख पहलुओं से जाति प्रथा को एक हानिकारक प्रथा के रूप में दिखाया है ? सच्चे लोकतंत्र की स्थापना के लिए लेखक ने किन विशेषताओं को आवश्यक माना है ?

पाठ के आस-पास

1. संविधान सभा के सदस्य कौन-कौन थे ? अपने शिक्षक से मालूम करें।
2. जाति प्रथा पर लेखक के विचारों की तुलना महात्मा गाँधी, ज्योतिबा फुले और डॉ० राममनोहर लोहिया से करते हुए एक संक्षिप्त आलेख तैयार करें और उसका कक्षा में पाठ करें।
3. 'जातिवाद और आज की राजनीति' विषय पर अंबेकर जयंती के अवसर पर छात्रों की एक विचार गोष्ठी आयोजित करें।
4. बाबा साहेब भीमराव अंबेकर को आधुनिक मनु क्यों कहा जाता है? विचार करें।

भाषा की बात

1. पाठ से संयुक्त, सरल एवं मिश्र नाक्य चुनें।
2. निम्नलिखित के विलोम शब्द लिखें-
सम्प, विभाजन, निश्चय, ऊँ स्वतंत्रता, दोष, सजग, रक्षा, पूर्वनिर्धारण
3. पाठ से विशेषण चुनें तथा उनका स्वतंत्र वाक्य प्रयोग करें।
4. निम्नलिखित के पर्यायवाची शब्द लिखें-
दूषित, श्रमिक, पेशा, अकस्मात्, अनुमति, अवसर, परिवर्तन, सम्मान

शब्द निधि

विडंबना. : उपहास

पोषक : समर्थक, पालक, पालनेवाला

पूर्वनिर्धारण : पहले ही तय कर देना

अकस्मात् : अचानक

प्रक्रिया : किसी काम के होने का ढंग या रीति

प्रतिकूल : विपरीत, उल्टा

स्वेच्छा : अपनी इच्छा

उत्पीड़न : बहुत गहरी पीड़ा पहुँचाना, यंत्रणा देना

संचारित : प्रवाहित

बहुविध : अनेक प्रकार से

प्रत्यक्ष : सामने, समक्ष

भ्रातृत्व : भाईचारा, बंधुत्व

वांछित : आकांक्षित, चाहा हुआ



नलिन विलोचन शर्मा



नलिन विलोचन शर्मा का जन्म 8 फरवरी 1896 ई. में पटना के बदरघाट में हुआ। वे जन्म से भोजपुरी भाषी थे और दर्शन व संस्कृत के प्रख्यात विद्वान महामहोपाध्याय पं. घमावतार शर्मा के ज्येष्ठ पुत्र थे। उनकी माता का नाम रत्नावती शर्मा था। उनके व्यक्तित्व निर्माण में उनके पिता के पांडित्य और प्रगतिशील दृष्टि का बड़ा योगदान था। नलिन जी की स्कूली शिक्षा पटना कॉलेजिएट स्कूल में हुई और बाद में उन्होंने पटना विश्वविद्यालय से संस्कृत और हिंदी में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। वे हरप्रसाद दास जैन कॉलेज, आरा, रांची विश्वविद्यालय, और अंततः पटना विश्वविद्यालय में प्राध्यापक रहे। 1959 में उन्हें पटना विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग का अध्यक्ष नियुक्त किया गया, और वे अपने जीवन के अंत तक (12 सितंबर 1961 ई.) इस पद पर बने रहे।

हिंदी कविता में प्रगतिवाद के प्रवर्तक और नई शैली के आलोचक नलिन विलोचन शर्मा की रचनाएँ इस प्रकार हैं: "दृष्टिकोण", "साहित्य का इतिहास दर्शन", "मानदंड", "हिंदी उपन्यास - विशेषतः प्रेमचंद", "साहित्य तत्त्व और आलोचना" (आलोचनात्मक ग्रंथ); "विष के दाँत" और सत्रह असंगृहीत पूर्व छोटी कहानियाँ (कहानी संग्रह); केसरी कुमार और नरेश के साथ काव्य संग्रह - "नकेन के प्रपद्य" और "नकेन-दो"; "सदल मिश्र ग्रंथावली", "अयोध्या प्रसाद खत्री स्मारक ग्रंथ", और "संत परंपरा और साहित्य" आदि संपादित ग्रंथ।

आलोचकों के अनुसार, प्रयोगवाद का वास्तविक प्रारंभ नलिन विलोचन शर्मा की कविताओं से हुआ और उनकी कहानियों में मनोवैज्ञानिकता के तत्त्व समग्रता से उभरकर आए। आलोचना में वे आधुनिक शैली के समर्थक थे। वे कथ्य, शिल्प, और भाषा के सभी स्तरों पर नवीनता के आग्रही लेखक थे। उनकी लेखनी में प्रायः परंपरागत दृष्टि और शैली का निषेध तथा आधुनिक दृष्टि का समर्थन स्पष्ट दिखाई देता है। उनकी आलोचना की भाषा गतिशील और संकेतात्मक है। उन्होंने अनेक पुराने शब्दों को नया जीवन दिया, जिससे वे आधुनिक साहित्य में पुनः प्रतिष्ठित हुए।

यह कहानी "विष के दाँत तथा अन्य कहानियाँ" नामक कहानी संग्रह से ली गई है। यह कहानी मध्यवर्ग के अनेक अंतर्विरोधों को उजागर करती है। कहानी का जैसा ठोस सामाजिक संदर्भ है, वैसा ही स्पष्ट मनोवैज्ञानिक आशय भी है। आर्थिक कारणों से मध्यवर्ग के भीतर सेन साहब जैसे लोग उभरते हैं जो अपनी महत्वाकांक्षा और सफेदपोशी के भीतर लिंग-भेद जैसे कुसंस्कार छिपाए रखते हैं। वहीं, गिरधर जैसे नौकरीपेशा निम्न मध्यवर्गीय व्यक्ति भी हैं, जो अनेक प्रकार की थोपी गई बंदिशों के बीच भी अपने अस्तित्व को बहादुरी और साहस के साथ बचाए रखने के लिए संघर्षरत रहते हैं। यह कहानी सामाजिक भेद-भाव, लिंग-भेद, और आक्रामक स्वार्थ की छाया में पलते हुए प्यार-दुलार के कुपरिणामों को उभारते हुए सामाजिक समानता और मानवाधिकार की महत्वपूर्ण बातों को प्रस्तुत करती है।

विष के दाँत

सेन साहब की नई मोटरकार बँगले के सामने बरसाती में खड़ी है - काली चमकती हुई, स्ट्राइप्ड; जैसे कोयल घोंसले में हो कि कब उड़ जाए। सेन साहब को इस कार पर नाज है - बिल्कुल नई मॉडल, साढ़े सात हजार में आई है। काला रंग, चमक ऐसी कि अपना मुँह देख लो। कहीं पर एक धब्बा दिख जाए तो क्लीनर और शोफर की शामत ही समझो। मेम साहब की सख्त ताकीद है कि खोखा-खोखी गाड़ी के पास फटकने न पाएँ।

लड़कियाँ तो पाँचों बड़ी सुशील हैं, पाँच-पाँच हैं और वो भी लड़कियाँ, तहजीब और तमीज की तो जीती-जागती मूरत ही हैं। मिस्टर और मिसेज सेन ने उन्हें क्या करना चाहिए, यह सिखाया हो या नहीं, क्या-क्या नहीं करना चाहिए, इसकी उन्हें ऐसी तालीम दी है कि बस। लड़कियाँ क्या हैं, कठपुतलियाँ हैं और उनके माता-पिता को इस बात का गर्व है। वे कभी किसी चीज को तोड़ती-फोड़ती नहीं। वे दौड़ती हैं, और खेलती भी हैं, लेकिन सिर्फ शाम के वक्त, और चूँकि उन्हें सिखाया गया है कि ये बातें उनकी सेहत के लिए जरूरी हैं। वे ऐसी मुस्कराहट अपने होठों पर ला सकती हैं कि सोसाइटी की तारिकाएँ भी उनसे कुछ सीखना चाहें, तो सीख लें, पर उन्हें खिलखिलाकर किलकारी मारते हुए किसी ने सुना नहीं। सेन परिवार के मुलाकाती रशक के साथ अपने शरारती बच्चों से खीझकर कहते हैं - "एक तुम लोग हो, और मिसेज सेन की लड़कियाँ हैं। अबे, फूल का गमला तोड़ने के लिए बना है? तुम लोगों के मारे घर में कुछ भी तो नहीं रह सकता।"

सो जहाँ तक सेन परिवार की लड़कियों का सवाल है, उनसे मोटर की चमक-दमक को कोई खास खतरा नहीं था। लेकिन खोखा भी तो है। खोखा जो एक ही है, सबसे छोटा है। खोखा नाउम्मीद बुढ़ापे की आँखों का तारा है - यह नहीं कि मिसेज सेन अपना और बुढ़ापे का कोई ताल्लुक किसी हालत में मानने को तैयार हों और सेन साहब तो सचमुच बूढ़े नहीं लगते। लेकिन मानने-लगने की बात छोड़िए। हकीकत तो यह है कि खोखा का आविर्भाव तब जाकर हुआ था, जब उसकी कोई उम्मीद दोनों को बाकी नहीं रह गई थी। खोखा जीवन के नियम का अपवाद था और यह अस्वाभाविक नहीं था कि वह घर के नियमों का भी अपवाद हो। इस तरह मोटर को कोई खतरा हो सकता था तो खोखा से ही।

बात ऐसी थी कि सीमा, रजनी, आलो, शेफाली, आरती - पाँचों हुई तो... उनके लिए घर में अलग नियम थे, दूसरी तरह की शिक्षा थी, और खोखा के लिए अलग, दूसरी। कहने के लिए तो सेनों का कहना था कि खोखा आखिर अपने बाप का बेटा ठहरा, उसे तो इंजीनियर होना है, अभी से उसमें इसके लक्षण दिखाई पड़ते थे। इसलिए ट्रेनिंग भी उसे वैसे ही दी जा रही थी। बात यह है कि खोखा के दुर्लभ स्वभाव के अनुसार ही सेन परिवार ने सिद्धांतों को भी बदल लिया था। अक्सर ऐसा होता है कि सेन परिवार के दोस्त आते हैं, भड़कीले डाइंग रूम में बैठते हैं और बातचीत के लिए विश्व के अभाव होने पर चर्चा निकल पड़ती है कि किसका लड़का क्या करेगा। जब सेन खड़म आदत मौलिकता और दूरदर्शन के साथ फरमाते हैं कि या तो अपने लड़के को अपने ढंग से ट्रेन करेंगे, या कर रहे हैं। आजकल की पढ़ाई-लिखाई तो फिजूल है, यह तो उसे अपनी तरह बिजनेस इंजीनियर बना देंगे। अब देखिए न," सेन साहब कहते हैं, "खोखा पाँच साल का हो रहा है। लोग कहते हैं, उसे किंडरगार्टन स्कूल में भेज दो, लेकिन मैंने अभी यही इंतज़ाम किया है कि कारखाने का

कोई मिस्री दो-एक घंटे के लिए आकर उसके साथ कुछ ठीक-ठाक किया करे। इससे बच्चे की उँगलियाँ अभी से औजारों से वाकिफ हो जाएँगी। हिन्दुस्तानी लोग यही नहीं समझते।"

एक दिन सेन साहब के कुछ दोस्त बैठे गपशप कर रहे थे। उनमें एक साधारण हैसियत के अधकठातवीस थे और सेन साहब के दूर के रिश्तेदार भी होते थे। साथ में उनका बेटा भी था, जो खोखा से भी छोटा था, पर बड़ा समझदार और होनहार मालूम पड़ता था। किसी ने उसकी कोई हरकत देखकर उसकी कुछ तारीफ कर दी और उन साहब से पूछा कि वो स्कूल जा रहा होगा? इसके पहले कि पत्रकार महोदय कुछ जवाब देते, सेन साहब ने शुरू किया और कहा कि खोखा को इंजीनियर बनाना आ रहा हूँ, और वे ही बातें दुहराकर थकते नहीं थे। एतरकार महोदय चुप मुस्कुराते थे। जब उनसे फिर पूछा गया कि अपने बच्चे के लिए उनके क्या विचार हैं, तब उन्होंने कहा, "मैं चाहता हूँ कि वह एक बेंटिलमैन बने और जो कुछ बने, उसका काम है, उसे पूरी आजादी रहेगी।" सेन साहब इस ऊँच दर्जे के शिष्ट और प्रच्छन्न व्यंग्य पर ऐंठकर रह गए।

तभी बाहर स्नेहगुल सुनकर सेन साहब उठने लगे, तो उनके मित्रों ने भी जाने की इच्छा प्रकट की और उन्हीं के साथ बाहर आए। बाहर वे देखे कि शॉफर एक औरत से उलझ रहा था। औरत के पास एक पाँच-छह साल का बच्चा खड़ा था, जिसे वह रोकने की कोशिश कर रही थी, क्योंकि बच्चा चार बार शॉफर की ओर झपट चुका था। सेन साहब ने देखा और शॉफर ने साहब की ओर बढ़कर अदब के साथ कहा, "देखिए साहब, बच्चा गाड़ी को छू रहा था, गाड़ी गंदी हो जाती, मैंने मना किया तो लगा कहने 'जा-जा', तो मैंने उसे पकड़कर अलग कर दिया। इस पर मुझको मारने दौड़ा। अब इसकी माँ भी आकर खा-खा मुझसे उलझ रही है।" बच्चे की माँ कुछ कहना चाहती थी, लेकिन सेन साहब के रुख देखकर चुप रह गई। सेन साहब ने बड़े संयत पर कठोर स्वर में कहा, "मदन की माँ, मदन को ले जाओ और देखना, वह फिर ऐसी हरकत न करे।